इमरे नागी

शिवदास घोष

इमरे नागी

यह लेख हंगरी में समाजवादी राज्य का तख्ता पलटने के लिए वहां प्रतिक्रांतिकारी बगावत का नेतृत्व करने वाले इमरे नागी को मौत की सजा दिये जाने के सवाल को लेकर कम्युनिस्ट हलकों में पैदा हुई गभीर सैद्धांतिक भ्रांति की पृष्ठभूमि में लिखा गया था।

जैसे ही हंगरी की सरकार द्वारा इमरे नागी पर मुकदमा चलाये जाने और उसे मौत की सजा दिये जाने की खबर अखबारों में आयी, दुनियाभर के साम्राज्यवादी-पूंजीवादी व अन्य प्रतिक्रियावादी तबकों ने एक साथ मिलकर हो-हल्ला मचा दिया। यह स्पष्ट है कि सस्ते मानवतावादी हाव-भाव और सस्ते लोकप्रिय लोकतंत्र की आड़ में प्रतिक्रियावादी साम्राज्यवादियों-पूंजीवादियों द्वारा शुरू किये गये इस हमले के पीछे दो उद्देश्य काम कर रहे हैं। पहला है, पूरी दुनिया की आंखों में कम्युनिस्ट विचारधारा और सोवियत संघ की छवि को गिराना और दूसरा है, पूर्वी यूरोप की विशेषकर हंगरी की प्रतिक्रियावादी शक्तियों के गिरते मनोबल को उठाने के लिए और उन्हें इन देशों की मजदूर वर्गीय राजसत्ताओं के साथ-साथ सोवियत संघ के खिलाफ संचालित करने के उद्देश्य से इस स्थिति का फायदा उठाना। साम्राज्यवादी-पूंजीवादी शक्तियां, जो आज 'मानवतावाद, लोकतंत्र और स्वतंत्रता के चैम्पियनों' के छद्म वेश में घूम रही हैं, इनकी काली करतूतों का घिनौना इतिहास किसी से छुपा नहीं है। एशिया और अफ्रीका के देशों की आजादी पसंद जनता का दमन करने के लिए उनके वहशियाना और बर्बर हथियारबंद हमलों तथा इस या उस बहाने इन देशों के अंदरूनी मामलों में उनके प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष नग्न हस्तक्षेप का लम्बा इतिहास सभी को पता है। अभी कुछ समय पहले ही संसदीय लोकतंत्र के पूर्वकालीन गढ़ फ्रांस में भी जब जनरल द गॉल ने हिटलरी तरीके से लोकतंत्र का गला घोंटकर एक तानाशाह के रूप में सत्ता पर

कब्जा कर लिया था, तब इन ''लोकतंत्र के चैम्पियनों'' को ऐसा नहीं लगा कि लोकतंत्र, मानवतावाद और स्वतंत्रता के उनके आदर्श खतरे में पड़ गये हैं। बल्कि, उल्टे, वे इस या उस तरीके से इन सब घृणित कार्यों को मौन समर्थन देने की हद तक चले गये थे। इसलिए समाजवाद के साथ गद्दारी करने वाले इमरे नागी, जिसने मजदूर वर्ग के राज्य को उखाड़ फेंक देने के लिए प्रतिक्रांतिकारी बगावत का नेतृत्व किया था, के खिलाफ मुकदमा चलाये जाने और उसे मौत की सजा दिये जाने को लेकर वे जो भी हो-हल्ला मचायें, उनके असली उद्देश्य को समझना कतई मुश्किल नहीं है और हमारा दृढ़ विश्वास है कि कोई भी ईमानदार और सही सोच रखने वाला व्यक्ति इससे भ्रमित नहीं होगा। दुनियाभर के समाजवादी व हमारे देश की प्रजा सोशलिस्ट पार्टी और उन्हीं की तर्ज पर कई अन्य तथाकथित वामपंथी पार्टियों के धड़े प्रतिक्रियावादियों के सुर में सुर मिलाने में इस मौके का फायदा उठाकर शामिल हो गये हैं। ये प्रतिक्रियावादी शक्तियां विश्व साम्यवादी आन्दोलन और सोवियत संघ के खिलाफ दुष्प्रचार एवं निन्दा अभियान में बड़े उत्साह से जुटी हुई हैं। मुंह से मानवतावाद और लोकतंत्र के नारे लगाते हुए वे असल में आम तौर पर जनता और विशेषकर साम्यवाद एवं सोवियत संघ के दोस्तों को भ्रमित कर देना चाहती हैं। इस सवाल पर चर्चा करने से पहले कि इमरे नागी पर मुकदमा चलाना और उसे सजा-ए-मौत देना लोकतंत्र व मानवतावाद के आदर्शों के अनुरूप था या नहीं, हम प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं के सामने कुछ सवाल रखना चाहेंगे। पहला यह कि मानवतावाद, लोकतंत्र और स्वतंत्रता के आपके आदर्श, जिनकी आपकी पार्टी अब इतनी बढ़-चढ़कर बात कर रही है, तब कहां चले गये थे, जब फ्रांसीसी साम्राज्यवादियों ने अल्जीरियाई स्वतंत्रता सेनानियों पर बर्बर हमला बोला था और हजारों निहत्थे आजादी पसंद लोगों का कत्ल कर डाला था और वह भी ऐसे समय पर जब सोशलिस्ट इंटरनेशनल से सम्बद्ध फ्रेंच सोशलिस्ट लोग सरकार में थे। आप सभी ने चुप बैठे रहने को कैसे तरजीह दी, जब जनरल द गॉल ने बंदूक की नोक पर जनता को डरा-धमकाकर

संसदीय लोकतंत्र को दफना दिया था तथा निरंकुश ताकत हासिल कर ली थी और फ्रेंच सोशलिस्ट बेशर्मी से उसके समर्थन में खड़े हो गये थे? जब हंगरी में नागी के नेतृत्व में प्रतिक्रियावादियों ने हिंसा का नग्न तांडव मचाया था और उस देश के श्रेष्ठतम सपूतों, कम्युनिस्टों का बेरहमी से कत्ल कर डाला था, तब मानवतावाद और लोकतंत्र के तथाकथित चैम्पियन आपके नेता चुप क्यों रहे? ईमानदारी का यह कैसा नमूना है? क्या हम आपसे आपकी पार्टी और आपके नेताओं की कथनी और करनी में इस स्पष्ट असंगति पर गहराई से, आवेग रहित एवं बिना पूर्वाग्रह के विचार करने का अनुरोध कर सकते हैं? दूसरा यह कि क्या कोई विचारधारा या गतिविधि सिर्फ इसीलिए पाक-साफ और समर्थन योग्य हो जाती है कि उसके पीछे जनसमर्थन जुटा लिया गया है? उदाहरण के तौर पर हिटलर का घृणित नाजीवाद, हमारे देश में मुस्लिम लीग के नेतृत्व में पाकिस्तान बनाने का आन्दोलन तथा विभिन्न समयों पर विभिन्न देशों में इसी तरह के प्रतिक्रियावादी कदम चाहे अस्थाई तौर पर ही सही, जनसमर्थन हासिल करने में सक्षम हो गये थे। इन सब प्रतिक्रियावादी कदमों एवं विचारों के पीछे विशाल जनसमर्थन होने के बावजूद क्या किसी ईमानदार और प्रगतिशील व्यक्ति ने उनका समर्थन किया था? इसलिए यह स्पष्ट है कि मात्र जनसमर्थन मिलना ही किसी विचार या आन्दोलन के चरित्र को तय करने का मापदण्ड नहीं हो सकता। जिस हंगरी में साम्राज्यवाद, पूंजीवाद और सामंतवाद को क्रांति के जरिये उखाड़ फेंककर समाजवादी राज्य कायम हुआ था, चाहे उसकी कमियां या सीमाबद्धताएं जो भी रही हों, उस हंगरी में संसदीय लोकतंत्र कायम करने के नाम पर भी पूंजीवाद को पुनर्स्थापित करने के लिए इस प्रतिक्रांतिकारी कदम का समर्थन अपने आपको समाजवादी कहने वाला कोई भी व्यक्ति किस तर्क के आधार पर कर सकता है? जब पता चलता है कि मात्र व्यापक जनसमर्थन के बहाने इन प्रतिक्रांतिकारी गतिविधियों का समर्थन करने में ये जरा भी नहीं हिचकिचाते, तब मानवतावाद व लोकतंत्र के इन तथाकथित चैम्पियनों के असली षड्यंत्र और उद्देश्य को भांप लेना क्या बहुत कठिन है? इतिहास का कोई भी छात्र यह

भली-भांति जानता है कि सोशल डेमोक्रेसी ने ही फासीवाद को जन्म दिया है। बुर्जुआ लोकतंत्र की तथाकथित 'आजाद दुनिया' में अब फिर वही सोशल डेमोक्रेसी साम्यवाद और सोवियत संघ के खिलाफ वास्तविक अभियान छेड़ने के मामले में पूंजीपतियों के हाथों में सबसे शक्तिशाली सैद्धांतिक हथियार बन चुकी है। हमारे देश में प्रजा सोशलिस्ट पार्टी एवं कुछ अन्य टुकड़े-टुकड़े हुई वामपंथी पार्टियां इस सड़ी-गली और बदनाम सोशल डेमोक्रेसी का परचम फहराते हुए मानवतावाद और लोकतंत्र की डींग मार रही हैं। हम तहेदिल से उम्मीद करते हैं कि कोई भी ईमानदार और सद्विवेकी इंसान इन पार्टियों के इस प्रकार के प्रचार अभियान से झांसे में नहीं आयेगा।

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि इस कुत्सा अभियान के पीछे साम्राज्यवादी-पूंजीवादी राष्ट्रों और सोशल डेमोक्रेटों का चाहे जो भी मकसद क्यों न हो, इस घटना विशेष को केन्द्रकर विभिन्न देशों के ईमानदार और सही सोच रखने वाले लोगों के बीच भी कुछ हद तक भ्रम पैदा हो गया है। यहां तक कि हमारे देश में चाहे छोटी हो या बड़ी, खुद के कम्युनिस्ट होने का दावा करने वाली पार्टियों में भी कुछ भ्रम मौजूद हैं। इसलिए इस संदर्भ में कुछ चर्चा आवश्यक हो गयी है। सबसे पहले तो यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि कोई भी व्यक्ति, चाहे वह खुद को कम्युनिस्ट कहता हो या नहीं, इस घटना का सही मूल्यांकन तब तक नहीं कर सकता, जब तक कि वह खुद को बुर्जुआ मानवतावाद और बुर्जुआ लोकतंत्र के प्रभाव से पूरी तरह मुक्त करने में सक्षम नहीं हो जाता। क्योंकि हम दृढ़ता से विश्वास करते हैं कि यह बुर्जुआ मानवतावाद का असर, एक वर्ग विभाजित समाज में वर्गोपरि लोकतंत्र की धारणा एवं बुर्जुआ संसदीय ढांचे और उसकी न्याय व्यवस्था के प्रति निरर्थक आकर्षण ही है, जो इस तरह का भ्रम पैदा करने के लिए मुख्यतः जिम्मेदार है। बुर्जुआ मानवतावाद और साम्यवाद की विचारधाराएं न केवल एक-दूसरे की पूरक नहीं हैं, बल्कि एक-दूसरे की विरोधी हैं। इसलिए सैद्धांतिक लड़ाई के क्षेत्र में बुर्जुआ मानवतावाद और साम्यवाद की विचारधाराओं के बीच टकराव

अवश्यंभावी है। परन्तु हम अक्सर पाते हैं कि कई बुद्धिजीवी, यहां तक कि तथाकथित कम्युनिस्ट भी, बहुधा कम्युनिस्ट नीति-नैतिकता संबंधी परिवर्तनशील धारणाओं को बुर्जुआ मानवतावादी नैतिक मूल्यों की शाश्वत एवं अपरिवर्तनीय धारणा के साथ गड्डमड्ड कर देते हैं। बुर्जुआ मानवतावाद का विचार मनुष्य के चिंतन-मनन के विकास के एक विशेष स्तर पर मानव समाज की एक विशेष जरूरत को पूरा करने हेतु उभरकर आया था। यद्यपि बुर्जुआ मानवतावाद ने सामंती व्यवस्था और निरंकुशता के युग में पूंजीपति और बुर्जुआ लोकतांत्रिक व्यवस्था कायम करने हेतु 19वीं शताब्दी के क्रांतिकारी आन्दोलन के उद्देश्य को आगे बढ़ाने में एक विशेष भूमिका निभाई थी, परन्तु आज मरणासन्न पूंजीवाद और विश्व सर्वहारा क्रांति के युग में बुर्जुआ मानवतावाद की वही विचारधारा जनता के साम्राज्यवाद-विरोधी, पूंजीवाद-विरोधी, एवं सामंतवाद-विरोधी क्रांतिकारी संघर्षों के खिलाफ शोषक पूंजीपति वर्ग के हाथ में सबसे शक्तिशाली वैचारिक हथियार प्रदान करती है। इतिहास साबित करेगा कि कम्युनिस्ट विचारधारा, उसकी रणनीति एवं रणकौशल के बिना किसी भी देश में सामंती एवं पूंजीवादी शासन-शोषण को खत्म कर निर्बाध सामाजिक विकास के रास्ते को खोल देना संभव नहीं हो सका है। केवल यही नहीं, जहां कहीं भी जनता ने मार्क्सवाद-लेनिनवाद को अपने संघर्ष का हथियार बनाकर अपनी मुक्ति हासिल की है, हर जगह ही उसने मानवतावाद की बुर्जुआ अवधारणा, नैतिक मूल्यों और लोकतंत्र की तथाकथित वर्गोपरि अवधारणा के खिलाफ सैद्धांतिक क्षेत्र में तीव्र एवं अनवरत संघर्ष चलाकर ही यह हासिल की है। इसलिए जो बुर्जुआ मानवतावाद पूंजीवादी शासन-शोषण के उद्देश्य एवं स्वार्थ में सहायक और पूरक विचारधारा के तौर पर इतिहास में चिह्नित किया गया है, उस बुर्जुआ मानवतावाद के मापदण्ड से अगर कोई एक कम्युनिस्ट के कार्य और नीति-नैतिकता की धारणा को जांचता है, तो वह भयंकर गलती कर बैठेगा। इस संदर्भ में हमें एक और बिंदु को भी ध्यान में रखना चाहिए। सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयतावाद के बुनियादी तौर पर विरोधी इस बुर्जुआ मानवतावाद व प्रतिक्रियावादी राष्ट्रवाद का ही

असर है, जो कम्युनिस्ट आन्दोलन में प्रकट हो रहे सभी प्रकार के संशोधनवादी एवं सुधारवादी भटकावों के मूल कारण के रूप में चिंतन के क्षेत्र में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कार्य कर रहा है। कम्युनिस्ट जिस मानवतावाद की बात करते हैं, वह बुर्जुआ मानवतावाद से गुणात्मक रूप से भिन्न है। जो धारणा, विचारधारा या आन्दोलन समाज को हर तरह के शोषण से मुक्त होने और इस तरह निर्बाध सामाजिक प्रगति के रास्ते को खोल देने में मदद पहुंचाता है, उसी की मानवीय न्याय के लक्ष्य के साथ संगति है और हमारी राय में मानवतावाद की उसी विचारधारा का कम्युनिस्ट लोग समर्थन करते हैं, इसकी परवाह किये बिना कि किस विचारधारा या राजसत्ता तंत्र के साथ उसका टकराव होता है अथवा संघर्ष हिंसक है या अहिंसक। परन्तु राष्ट्रीय आजादी, स्वतंत्रता, लोकतंत्र, अहिंसा, विश्वबंधुत्व–चाहे किसी नाम से भी हो–यदि ऐसी कोई धारणा, विचारधारा या आन्दोलन जनहित के खिलाफ जाता है तथा विकास एवं समाज की प्रगति में बाधा डालता है, तो वह जनता के उद्देश्य के साथ कोरा विश्वासघात है और खुद मानवतावाद के ही खिलाफ है। आज जब दुनिया दो विरोधी खेमों में बंटी हुई है, जिसमें एक तरफ पूंजीवादी-साम्राज्यवादी देश और दूसरी तरफ कम्युनिस्टों के नेतृत्व में समाजवादी देश हैं और जब विश्व समाज व्यवस्था के भविष्य का रूपाकार इन दो विरोधी खेमों के बीच मौजूद बुनियादी द्वन्द्व के परिपेक्ष्य में विभिन्न देशों में संचालित होने वाली पूंजीवाद-विरोधी क्रांतियों की सफलता पर निर्भर करता है, तब किसी देश में समाजवादी राजसत्ता को उखाड़ फेंकने का कोई भी प्रयास न सिर्फ उस देश की जनता के उद्देश्य के साथ विश्वासघात है, बल्कि वह दुनियाभर की मेहनतकश जनता के हितों के प्रति भी विश्वासघात है और ऐसा करने वाला मानवता के दुश्मन के रूप में काम करता है। यद्यपि हम रोजेनबर्ग्स को मौत के घाट उतारे जाने को मानवता के खिलाफ काम मानते हैं, लेकिन नागी को मौत की सजा दिये जाने का निर्णय जनहित एवं सामाजिक न्याय के सिद्धांत के साथ पूर्णतः संगतिपूर्ण मानते हैं। एक बुर्जुआ संसदीय देश की न्याय व्यवस्था को न्याय प्रदान करने की एक

उचित पद्धति के तौर पर एक सच्चा कम्युनिस्ट कभी भी स्वीकार नहीं कर सकता है, क्योंकि हर मार्क्सवादी या कम्युनिस्ट यह जानता है कि बुर्जुआ लोकतांत्रिक देशों की तथाकथित लोकप्रिय जनतांत्रिक न्यायिक प्रणाली यद्यपि दिखावे के तौर पर सभी को न्याय प्रदान करने का ढोंग करती है, परन्तु अंतिम विश्लेषण में यह पूंजीपतियों के वर्ग स्वार्थ की रक्षा करने का ही एक औजार है, भले ही वह कुछ छोटे-मोटे मामलों में जनता के पक्ष में निर्णय दे देती हो। परन्तु जब बुनियादी वर्ग स्वार्थ का मामला जुड़ा होता है, तब यह जनता के लिए एक ढकोसला, न्याय का एक झूठा दिखावा साबित होती है। चूंकि इमरे नागी और उसके सहयोगियों का न्याय-विचार उस ''सस्ते लोकप्रिय जनतंत्र'' की प्रक्रिया से नहीं किया गया (जो एक धोखे के सिवाय और कुछ नहीं है) इसलिए कोई भी कम्युनिस्ट इस बात को स्वीकार नहीं कर सकता है कि न्याय के सिद्धांत का उल्लंघन हुआ है। **अतः यहां असली मुद्दा यह नहीं है कि न्याय विचार बुर्जुआ लोकतांत्रिक न्याय पद्धति की औपचारिकताएं पूरी करते हुए किया गया है या नहीं। यहां सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि इमरे नागी और उसके सहयोगियों ने एक समाजवादी राज्य को ध्वस्त करने के इरादे से हंगरी में चल रहे क्रांति-विरोधी आन्दोलन को नेतृत्व दिया था या नहीं।** उनकी ये गतिविधियां आम जनता के हितों के प्रति विश्वासघातक थीं और स्वयं मानवता के खिलाफ चली गयी थीं या नहीं। अगर कोई यह मानता है कि पूंजीवाद को पुनर्स्थापित करने के लिए एक समाजवादी राज्य को ध्वस्त करने के लिए आन्दोलन गठित करना मानवतावाद के साथ पूरी तरह से मेल खाता है, तब तो उसकी बात ही दूसरी है। लेकिन जो लोग आम जनता और समाज के सभी प्रगतिशील तबकों के उद्देश्य से सहानुभूति रखने वाले हैं, वे लोग निस्संदेह अगर साम्यवादी आन्दोलन और सोवियत संघ के प्रति पूर्वाग्रह से ग्रसित न हो जायें, तो उन सभी के लिए ऐसी गतिविधियों का एकमात्र मायने है आम जनता के उद्देश्य के साथ एकदम विश्वासघात और मानवता की हत्या। **अगर मानव समाज में किसी व्यक्ति को मौत की सजा दी जाती है, तो यह मान लेना होगा**

कि इन घृणित गतिविधियों में लिप्त ऐसे व्यक्ति निश्चित रूप से ही इस सजा के हकदार होते हैं। अगर किसी व्यक्ति को पूर्वी यूरोप के नवजनवादी राष्ट्रों (न्यू डेमोक्रेटिक स्टेट्स) की वास्तविक राजनीतिक स्थिति और इन देशों में गुप्त रूप से निरन्तर चलाई जा रही साम्राज्यवादी गतिविधियों के विषय में उपयुक्त जानकारी होती, तो उसे इस विचार-विवेचना के औचित्य और महत्व को समझने में कोई परेशानी नहीं होती, जिसकी अभिव्यक्ति नागी को प्राणदण्ड दिये जाने के रूप में हुई है।

अंत में, अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन के नेताओं और विशेष रूप से भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के आम कार्यकर्ताओं से हम कुछ शब्द कहना चाहेंगे।

संशोधनवाद, सुधारवाद और जनतंत्रीकरण का रुझान, जिसका असल मायने विकेन्द्रीकरण है, जो साम्यवादी आन्दोलन के वैचारिक एवं सांगठनिक कार्यकलापों के क्षेत्र में सीपीएसयू की 20वीं कांग्रेस से विकसित होना शुरू हुआ था और जो थोड़े ही समय में एक ताकतवर शक्ति बन गया है, काफी हद तक वर्तमान में व्याप्त सैद्धांतिक भ्रम के लिए जिम्मेदार है। **अंतर्राष्ट्रीय पैमाने पर तीव्र वर्ग संघर्ष की इस घड़ी में हमारा मानना है कि सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयतावाद, सर्वहारा क्रांति, सर्वहारा अधिनायकत्व के सिद्धांतों, जनवादी केन्द्रीयता पर आधारित एक मानवदेह जैसी पार्टी तथा मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धांतों के ऐसे ही अन्य मूल तत्वों पर जोर देना अति महत्वपूर्ण है।** परन्तु समाजवादी देशों के बीच आपसी संबंध के क्षेत्र में हम देखते हैं कि सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयतावाद के सिद्धांत पर डटे रहने की जरूरत को सही-सही समझने की बजाय अपने बीच आपसी संबंध विकसित करते समय राष्ट्रीय संप्रभुता तथा अधिकारों की बराबरी पर ही अब तक एकतरफा व एकांगी जोर दिया जाता रहा है। इससे भी बड़ी बात यह है कि ''अलग-अलग देशों में समाजवाद के अलग-अलग रास्ते'' के नारे की आड़ में और लोकतंत्र व लोकतांत्रिक व्यवस्था की वर्गीय उत्पत्ति या वर्गीय सारतत्व से जोड़े बिना आम शब्दों में व्याख्या करने और इस प्रकार जनता में 'लोकतंत्र' के बारे में

वर्गोपरि धारणा तथा बुर्जुआ संसदीय व्यवस्था के प्रति निरर्थक आकर्षण पनपाने के व्यवहार के चलते राज्य व्यवस्था व जनतंत्र के बारे में मार्क्सवादी दृष्टिकोण व वर्ग नजरिये की असल में अनदेखी की गयी है।

हमारे देश में इसका इतना ज्यादा विनाशकारी असर हुआ कि सीपीआई की केरल राज्य इकाई ने इस पार्टी की केन्द्रीय कमेटी से इमरे नागी की सजा-ए-मौत के खिलाफ विरोध की आवाज बुलन्द करने की खुलेआम मांग तक कर डाली है। इस संबंध में हमारे देश के अनेक कम्युनिस्ट मित्रों ने कम्युनिस्ट आचार संहिता तक का पालन करना जरूरी नहीं समझा। इसलिए हम कम्युनिस्ट दोस्तों से इमरे नागी को सजा-ए-मौत दिये जाने को लेकर उपजे सैद्धांतिक भ्रम के असली कारण के बारे मे शांत भाव से विचार करने का अनुरोध करते हैं।

पार्टी के बांग्ला मुखपत्र
गणदाबी में 12 जुलाई 1958
के अंक में पहली बार प्रकाशित।